दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी

श्रीमती मालती रामबली

हिंदी शिक्षा संघ एक ऐसी संस्था है जो चौंसठ बर्षों से हिंदी भाषा की सेवा कर रही है। एक समय था जब लोग हिंदी बोलते थे लेकिन हम अब इस जगह यर आ गए हैं जहाँ बहुत कम लोग हिंदी बोलते हैं या हिंदी से परिचित है। इतिहास गवाँह है कि एक समय हिंदी भाषा दक्षिण अफ़्रीका में भारतीय मूल के कुछ लोगों की मातृभाषा थी ।

जब हमारे पूर्वज यहाँ आए थे वे भोजपुरी बोलते थे। समय के साथ-साथ सभाएँ स्थापित की गई थी। सभाओं में हिंदी पढ़ाई गई थी। आप जानते हैं कि 1920 's में खड़ी बोली की स्थापना भारत में, दक्षिण अफ़्रीका की भोजपुरी को प्रभावित किया। धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं ने हिंदी भाषा जागृत रखने की कोशिश की। आज भी, कई पाठशालाएँ, मन्दिरों से जुड़ी हुई हैं। अभी भी वे हिंदी भाषा और संस्कृति फैलाते हैं ।

हमारे पूर्वजों में ऐसे लोग थे जिन्होंने हिंदी बढ़ाने के लिए बहुत प्रयत्न किया। एक ऐसे व्यक्ति थे स्वामी शंकरानंद जी, जो भारत से थे। आप एक धर्मप्रचारक थे। इनके बाद थे स्वामी भवानी दयाल संयासी। उन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कई संस्थाओं से निवेदन किया।

1947 में पंडित नरदेव वेदालंकार दक्षिण अफ़्रीका में आये थे। उन्होंने देखा कि दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी का प्रचार-प्रसार सही ढ़ग से नहीं हो रहा था। आर्य प्रतिनिधि सभा और सनातन धर्म सभा की सहायता से उन्होंने हिंदी शिक्षा संघ को स्थापित किया। आप पहले प्रधान बने और 27 वर्षों के लिए आप ने इस पद में हिंदी भाषा की सेवा की। आप का एकमात्र लक्ष्य था हिंदी भाषा की सेवा, प्रचार के रूप में। आप एक बहुत ही ठोस गाँधीवादी थे और इसलिए हिंदी उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। 1947 में उन्होंने हिंदी साक्षरता (Literacy) का सम्मेलन रचाया। 35 पाठशालाएँ इसमें शामिल थीं । यहाँ से शिक्षक प्रशिक्षण (Teacher training) शुरू हो गया। उनके बाद कई प्रधान आए और उन्होंने इस लक्ष्य को बढ़ाने की कोशिश की। कई क्षेत्रों में यह माना गया है कि हिंदी आज भी जीवित है क्योंकि हिंदी शिक्षा संघ ने हिंदी भाषा को जीवित रखने की पूरी कोशिश की।

हिंदी शिक्षा संघ के तीन लक्ष्य हैं - हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य का प्रोत्साहन, भारतीय संस्कृति का प्रोत्साहन और हिंदू शास्त्रों का प्रचार-प्रसार।

हिंदी शिक्षा संघ के कार्यक्रमों में हमेशा युवाओं को मौका दिया जाता है। हर साल हम प्रतियोगिताएँ (eisteddfod) रखते हैं। प्रतियोगिता के चार अंक हैं -बाल विभाग, किशोर विभाग, युवा विभाग तौर प्रौढ़ विभाग। प्रतियोगिता कविता, नाटक, नृत्य और संगीत में विभाजित किया गया है। इसके माध्यम से हमारी कोशिश रही है कि लोगों को मौका मिले अपनी-अपनी कला / हुनर प्रस्तुत करने के लिए, जो हिंदी भाषा से संबंधित हैं। इन अदाकारियों (Performances) के माध्यम से बच्चे हिंदी समझने लगे हैं क्योंकि सारी प्रस्तुतियाँ हिंदी में हैं। युवाओं के लिए यह अनुभव वर्षों तक उनके दिलों और दिमागों में रहता है।

हिंदी शिक्षा संघ के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए परीक्षाएँ भी रखी गई हैं और इन राष्ट्रीय परीक्षाओं के माध्यम से हम हिंदी के प्रचार में लगे हुए हैं, शुरुवात से।

प्रारंभ में दक्षिण अफ़्रीका के हिंदी विद्यार्थीगण वर्धा की परीक्षाएँ लिखते थे। 1970's में बदलाव आया। उस समय हिंदी शिक्षा संघ के अध्यक्ष, डॉक्टर हेमराज और हिंदी शिक्षा संघ की कार्यकारिणी बोर्ड ने यह निर्णय लिया कि हमारी परीक्षा पत्र हिंदी शिक्षा संघ में तैयार किया जाए। यह निर्णय इसीलिए लिया गया क्योंकि हमारी चुनौतियाँ बदल गईं। कुछ लोगों की सोच थी कि दक्षिण अफ़्रीका के कम लोग हिंदी बोलते थे क्योंकि परीक्षा मुश्किल थी । फलस्वरूप 2014 में 625 विद्यार्थियों ने परीक्षा लिखीं। संख्या और बढ़ सकती हैं, लेकिन जैसे मैंने कहा है बाकि देशों की तूलना में हमारी स्थिति अलग है, इसलिए चुनौतियाँ भी अलग होगी। शायद यह निर्णय सही था।

आज हमारे विद्यार्थी दक्षिण अफ़्रीका के अलग-अलग प्रांतों में पढ़ते हैं और परीक्षा लिखते हैं, खास कर क्वा ज़ुलू नटाल में, गौतेंग में और पोर्ट एलिज़बेत में परीक्षा लिखते हैं और वह भी एक साथ। हमारी परीक्षाएँ विभिन्न स्तरों में विभाजित की गई है। और वे हैं प्रथमा, प्राथमिक, प्रारंभिक, प्रकाश, प्रदीप और प्रवेश। उसके बाद, विद्यार्थी महीने में एक बार हिंदी शिक्षा संघ आते हैं हिंदी सीखने के लिए। यहाँ हमारे शिक्षक दल उनको पढ़ाते हैं । कई पाठशालाओं में भी यह शिक्षण होता है।

हमारी पुस्तकें भारत से आती हैं । हम झरना सीरीज़ का प्रयोग करते हैं।

अफ़सोस की बात है कि हिंदी बोलने वाले कम हो गए हैं। कई लोग लिख सकते हैं और पढ़ सकते हैं लेकिन बोल नहीं सकते हैं। ऐतिहासिक तौर से हम जानते हैं कि क्या हुआ। अंग्रेज़ी सीखते-सीखते हम हिंदी भूल गए। लेकिन आज हम लोकतंत्र शासन के सदस्य हैं तो हमें अपने अधिकार के लिए लड़ना

चाहिए और यह लड़ाई शुरू होती है अपने आप से। We can make demands from the government, but if we are not prepared to put the effort we will go nowhere.

दूसरा कारण अपराध है। कई पाठशालाएँ शाम कौ खुलते हैं ताकि काम वाले पाठशाला जा सकतें। अपराध के कारण से लोग पाठशाला जाने से डरते हैं। अपराध की दृष्टि से हमारी स्थिथि बिलकुल खुली है।

भारतीय मूल के लोगों का इतिहास अनुबंधित श्रमिक से जुड़ा हुआ है। हिंदी भाषा के संदर्भ में वे लोग जो दक्षिण अफ़्रीका आए थे वे भोजपुरी के विभिन्न रूपों के साथ आए थे।

ये आम लोग थे, ज़्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे मगर वे बड़ी आसानी से तुलसीदास कृत रामचरितमानस के पदों को रटते थे। दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी भाषा का जन्म इन महान व्यक्तियों से हुआ। यह था 1860 से।

मगर अगर हम खड़ी बोली के इतिहास की जाँच करेंगे तो यह बात सामने आती है कि खड़ी बोली अपने वर्तमान रूप में 1920's के बाद निखर आई। तो इस बात को परखना ज़रूरी है क्योंकि 1860 से 1930 तक सत्तर साल का अंतर है। शुरुआत में भोजपुरी बोली जाती थी और अब खड़ी बोली भारत की राष्ट्रभाषा घोषित की गई तो इसका असर दक्षिण अफ़्रीका की भोजपुरी पर पड़।। धीरे-धीरे लोग भोजपुरी को कम महत्व देने लगे।

आर्थिक दृष्टि से अगर देखा जाए तो हिंदी सीखने से कुछ नहीं मिलने वाला है। कई लोग इसलिए हिंदी सीखते हैं ताकि वे रामचरितमानस पढ़ सकें। हमारे कुछ शिष्य स्कूलों में पढ़ाते हैं लेकिन स्कूलों में बच्चों की संख्या कम है। हमारे स्कूलों के नए पाठ्यक्रम में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को कोई अहमियत नहीं दी गई। कई अध्यापक तथा अध्यापिकाएँ मंदिरों से जुड़े हुए हैं और उन्हें कुछ तंख्या नहीं लिमती।

क्वा ज़ुलू नटाल के पाठशालाओं के बच्चे अधिकतर भारतीय परिवारों से आते हैं। सरकरी स्कूलों में अधिक बच्चे अफ़्रीकी हैं। लेकिन जोहांसबर्ग की बात अलग है, श्री शिचनाथ जी इसके बारे में आप को सुचित करेंगे।

दक्षिण अफ़्रीका में प्रौद्योगिकी हिंदी के संदर्भ में एक गभीर समस्या है। गुलशन जी और बालेंदु जीं आए थे फ़ॉन्ट के कार्यशाला के लिए। हम इस लिपि का इस्तमाल करते हैं मगर हमारे अध्यापक-अध्यापिकाएँ सामान्यतः पुरानी पीढ़ी हैं, उनमें से कम लोग कंप्यूटर का प्रयोग करते हैं। मगर यथार्थ यही है कि अगर हम हिंदी को जीवित रखना चाहते हैं तो यह फ़ॉन्ट ज़रूरी है क्योंकि आती पीढ़ी प्रौद्योगिकी में वहुत होश्यार है और वे इसी माध्यम को चुनते हैं। हमें ऐसा फ़ॉन्ट का प्रयोग करना चाहिए और सब जानते हैं कि इसका प्रयोग आसान है। और मेहनत करनी पड़ेगी इस फ़ॉन्ट को ले कर।

अधिक पाठशालाएँ मंदिरों से जुड़े हुए हैं इसी कारण से वे औपचारिक नहीं हैं। कई पाठशालाएँ स्कूलों में रखीं गई हैं। एक समय पर लोग अपने घरों में, गराजों में पढ़ाते थे लेकिन यह परिस्थिति आज कम हैं हम से संबद्ध पाठशालाओं में प्रथमा से प्रवेश तक हिंदी सिखाई जाती है। उसके बाद, महीने में एक बार वरिष्ठ स्तर (senior levels) की पढ़ाई के लिए हिंदी शिक्षा संघ के केंद्र में आते हैं। ये स्तर हैं प्रबोध, प्रवीण, परिचय, विशारद और कोविद। कोविद के बाद शिक्षण पद्धति आती है। लेकिन अफ़सोस की बात यही है कि हिंदी शिक्षा संघ को मान्यता नहीं मिला है। इसीलिए शिक्षण पद्धति सिर्फ हिंदी शिक्षा संघ के लिए प्रासंगिक है। यूनिवर्सिटी में भी भारतीय भाषाएँ नहीं सिखाई जाती है। दोष किसकी है? दोष हमारे लोगों का है क्योंकि संख्या कम थी और इसलिए निर्णय लिया गया कि ये भाषाएँ निकाली जाएँगी।

हिंदी शिक्षा संघ एक ही संस्था है जिसका काम है हिंदी का प्रचार-प्रसार। दक्षिण अफ़्रीका में तमिल फेडरेशन, आन्द्र महा सभा, गुजराति संस्कृति, बज़में अदब हैं। सब अपनी भाषाओं के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं। हमारे यहाँ पूर्वी भाषा संस्थान (Institute of Eastern Languages) है जो कई सालों से भारतीय भाषाओं के प्रति लड़ रहा है।

आर्थिक दृष्टि से सरकार को ओर से हमें कोई सहायता नहीं मिलती है। हम ने अनुदान सहायता (grant-in-aid) के लिए निवेदन किया लेकिन फिर भी सरकार हमें कुछ नहीं देती है। यह हमारी खुशनसीबी है कि हिंदवाणी हमारा एक अंग है। इस स्टेशन के विज्ञापनों द्वारा हम हिंदी शिक्षा संघ को चलाते हैं।

दक्षिण अफ़्रीका में एक नया पाठ्यक्रम निकला है CAPS - Curriculum And Assessment Policy Statement। यह एक राष्ट्रीय दस्तावेज़ है। पुराने पाठ्यक्रम के अनुसार भारतीय भाषाओं के लिए जगह थीं लेकिन इस साल से यह स्थिति बदल गई है। हमें कहा गया है कि भारतीय भाषाएँ सीखने के लिए बच्चे स्कूल के बाद हिंदी स्कूल आना ताकि वे अपनी भाषाएँ सीख सकें। इसका तात्पर्य यही है कि सरकारी स्कूलों में हमारी भाषाओं को अपना सही स्थान नहीं मिल रहा है । स्कूल के बाद अन्य बच्चे स्पोर्ट, इत्यादि के लिए जाते हैं, अगर बच्चों को हिंदी स्कूल और स्पोर्ट में चुनना है तो वे क्या चुनेंगे? आखिर ये बच्चे हैं।

हमारी सब से बड़ी समस्या यही है कि हम लोगों को हिंदी सीखने के लिए प्रत्साहित नहीं कर सकते। हम लोगों पर ज़ोर नहीं डाल सकते। और हमारे देश में हिंदी बोलने का मौका कम है। हमारे लिए हमारी भाषा हमारी संस्कृति से जुड़ी हुई है ।

किससे क्या बोले हम? हिंदवाणी द्वारा हम कोशिश करते हैं लेकिन समस्या गंभीर है। रेडियो लोटस पर भी भाषा का प्रचार-प्रसार होता है। स्कूलों में कई अध्यापक-अध्यापिकाएँ पढ़ाते हैं लेकिन उन्हें भी पता नहीं है कि अगले साल भारतीय भाषाएँ सीखाई जाएँगी या नहीं।

लगता है कि दक्षिण अफ़्रीका की स्थिति इतना उज्जवल नहीं है, मगर यह भी सच है कि घर-घर में ज़ी टी.वी. है। तो लोग हिंदी सुनते हैं और समझते हैं? कब बोलने लगेंगे। हम आशा रखते हैं कि यह दिन दूर नहीं है।

बाकि मैं अंग्रेज़ी में कहूँगी *"We have to decolonize our minds."* अंग्रेज़ी सीखते-सीखते हम हिंदी भी सीख सकते हैं।

अध्यक्षा, हिंदी शिक्षा संघ
डरबन, दक्षिण अफ़्रीका
mramballi@yahoo.com